International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 824-825

अथर्ववेद में प्रतिपादित पशु–चिकित्सा विज्ञान–विषयक सन्दर्भ

डॉ0 तरुण कुमार शर्मा

प्रवक्ता, संस्कृत–विभाग, अतर्रा पी0जी0 कालेज, अतर्रा, बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

वेद भारत के ही नहीं अपितु विश्व की अमूल्य एवं मौलिक निधि है। इनमें ज्ञान–विज्ञान का विशद भण्डार है, इसीलिए भारतवासी ही नहीं अपितु विदेशी भी वेद के सम्मुख श्रद्धावान् होकर नत मस्तक होते हैं। इस सन्दर्भ में अथर्ववेद का परिशीलन करने से ज्ञात होता है कि अथर्ववेद में केवल मानवमात्र की चिकित्सा के सन्दर्भ ही नहीं अपितु पशु–चिकित्सा विषयक सन्दर्भ भी बिखरे पड़े हैं। पश्वायुर्वेद के नाम से प्रसिद्ध पशु–चिकित्सा की भारतीय परम्परा अति प्राचीन है ऐसा प्रतीत होता है कि जब से मानवों की चिकित्सा का प्रारम्भ हुआ होगा तभी से पशु चिकित्सा भी आरम्भ हुई होगी। पश्वायुर्वेद के रूप में अभिवर्णित पशु–चिकित्सा का भी सैद्धान्तिक विवेचन वेदों में और विशेषकर अथर्ववेद में बड़े ही व्यवस्थित रूप में प्राप्त होता है। वेदों में विभिन्न देवों के अतिरिक्त अश्विनीकुमारों को पशुओं का चिकित्सक बताया गया है। आगे चलकर पश्वायुर्वेद की प्रमुख तीन शाखायें हुई–गजायुर्वेद, अश्वायुर्वेद और गवायुर्वेद। इनमें दो ग्रन्थ हस्त्यायुर्वेद और गजशास्त्र प्रकाशित भी हैं। बृहस्पति कृत गजलक्षण, नीलकण्ठ रचित मातंगलीला और हेमाद्रि द्वारा उल्लिखित गजदर्पण आदि गजायुर्वेद की उल्लेख्य रचनाएं हैं। इसी तरह शालिहोत्र संहिता अश्वायुर्वेद की प्रमुख कृति है तथा अश्ववैद्यक अश्वशास्त्र तथा हयलीलावती आदि भी उल्लेखनीय हैं। पाण्डव सहदेव गवायुर्वेद के ज्ञाता माने जाते हैं, परन्तु उनका कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं होता है। सोमेश्वरकृत मानसोल्लास में पशु–पक्षियों की चिकित्सा की चर्चा मिलती है। पशुचिकित्सा का सैद्धान्तिक विवेचन हमें वेदों में और विशेष रूप से अथर्ववेद में सम्यक् रूप से परिलक्षित होता है, अथर्ववेद में प्राप्त होने वाले ऐसे अनेक सूक्त हैं जिनमें मानवों की चिकित्सा के साथ–साथ पशु चिकित्सा का भी उल्लेख है परन्तु इनके अतिरिक्त कुछ स्वतन्त्र सूक्त भी मिलते हैं जिनमें स्वतन्त्र रूप से मात्र पशु–चिकित्सा का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में पशुओं में होने वाले विभिन्न रोगों तथा उनकी चिकित्सा से सम्बन्धित जो तथ्य उल्लिखित हैं–

पशु–संरक्षण

अथर्ववेद में पशुओं के रख–रखाव एवं संरक्षण से सम्बन्ध रखने वाले कुछ तथ्यों का उल्लेख प्राप्त होता है–

1. पशुओं के चिकित्सकों के लिए अथर्ववेद में कहा गया है कि वे 'सुहार्द' अर्थात् शोभन हृदय वाले हों और 'सुकृत' अर्थात् अपने कार्य को उचित रीति से करने वाले हों – यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति।[1] इसकी व्याख्या करते हुए आचार्य सायण ने लिखा है – यत्र यस्मिंश्च लोके सुहार्दः शोभनहृदयाः सुकृतः शोभनकर्मणः पुरुषाः मदन्ति हृष्यन्ति।[2]
2. अथर्ववेद के उपर्युक्त मन्त्रां में 'यत्रा' शब्द पशु चिकित्सा के अभिप्राय को ध्वनित करता है आगे के मन्त्र में भी इसी भाव को अभिव्यक्त करते हुए कहा गया है कि उस लोक अर्थात् चिकित्सालय में अग्निहोत्र आदि के द्वारा सदा स्वच्छता रखी जाती है– अग्निहोत्र हुतां यत्र लोकः।[3] पशुचिकित्सालय की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि वहाँ जाकर पशु निरोग हो जाय, विहाय रोगं तन्वः स्वायाः।[4]
3. जब पशु रोगी हो जाएँ तो उनको यथा शीघ्र ही चिकित्सकों के पास ले जाना हितकर है– उतैनां ब्रह्मणे दद्यात्।[5] यद्यपि आचार्य सायण ने इस अंश की व्याख्या करते हुए कहा है कि उस गाय अथवा पशु को ब्राह्मणों को दान में दे देना चाहिए किन्तु यदि ब्राह्मण शब्द का अर्थ चिकित्सक किया जाय तो वह भी अनुचित नहीं होगा क्योंकि यजुर्वेद के एक मन्त्र में स्पष्ट रूप से चिकित्सक को 'विप्र' कहा गया है– विप्रः स उच्यते भिषक्।[6]
4. अथर्ववेद के एम मन्त्र में यह भी कहा गया है कि निरोग हुए पशु अथवा चिकित्सालय ऐसे हों जो अन्य पशु एवं वहाँ स्थित व्यक्तियों को प्रभावित न करें अर्थात् एक पशु के रोग दूसरे पशु को नहीं लग सके– नो मा हिंसीत् पुरुषन् पशूंश्च।[7]

अथर्ववेद में पशुओं के रख–रखाव एवं संरक्षण के अतिरिक्त पशुओं में होने वाले रोगों के कारणों का भी उल्लेख प्राप्त होता है–

1. **यमिनी –** अथर्ववेद में यामिनी को पशु रोग के प्रमुख कारण के रूप में माना गया है कि जब गाय आदि जुड़वे बच्चे को जन्म देती है तो उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता है– यत्र विजायते यमिन्यपर्तुः सा।[8] पद्मश्री डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी ने यमिनी होने के अभिप्राय को वैद्यकीय सिद्धान्त के अनुसार व्याख्यायित करते हुए कहा है– ''गाय जिस समय प्रसतू होती है उसके बाद गर्भस्थान से कुछ अंश नीचे गिरते हैं यदि गाय उस गिरे हुए अंश को खा लेती है तो वह रोगी हो जाती है गर्भ में जुड़वे बच्चे होने से कुछ व्रण आदि हो जाते हैं, और वहाँ प्रसूति स्थान का विष लगने से गाय आदि पशु रोग युक्त हो जाते हैं। इस प्रकार प्रसूति के समय गाय आदि पशुओं के रोगी होने की सम्भावना अधिक होती है।''
   अतः गोपालक को पूर्ण सावधानी के साथ गाय की रक्षा करनी चाहिए। यदि प्रसूति के समय सावधानी न बरती गयी तो यह रोग संसर्ग में आने वाले दूसरे पशुओं को भी लग जाता है।[9]
2. **अपर्तु –** अथर्ववेद के उपर्युक्त उद्धरण में ''अपर्तुः सा'' कहा गया है। अपर्तुः (अप+ऋतुः) यानी ऋतु के विरुद्ध आचरण करने से गाय आदि पशु अवस्थ हो जाते है। ऋतु के अनुसार आहार न करने से भी गाय आदि को बीमारी लग जाती है। सायण ने 'अपर्तुः' का अर्थ– 'अपकृष्टार्तवबीजोपेता'[10] किया है।
3. **व्यद्वरी –** अथर्ववेद के ''क्रव्यं मासं अत्तीति क्रव्यात्। ..... मांसादनशीला भूत्वा।''[12] मन्त्र में गाय के रोगी होने के

कारणों 'व्यद्वरी' पद का भी प्रयोग हुआ है यदि कोई गाय भूख से अधिक खा ले तब भी वह 'अफरा' आदि रोगों से युक्त हो जाती है। यह रोग अजीर्णता के कारण होता है।

4. **पशु चिकित्सा एवं संरक्षण –** अथर्ववेद में पशु आदि के संरक्षण और उनमें होने वाले रोगों के अतिरिक्त उनकी चिकित्सा सम्बन्धी संकेत भी परिलक्षित होते हैं–

अथर्ववेदः औषधीय चिकित्सा

अथर्ववेद के मन्त्र में कहा गया है कि अरुन्धती नामक वनस्पति (ओषधि) गाय आदि पशुओं को नीरोगता प्रदान करने में सहायक होती है। गाय आदि पशुओं के दूध को बढ़ाती है और जो इछ देने वाली नहीं होती है उनके दूध बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है–

अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्वमरुन्धति।
अधेनवे वयसे शर्म यच्छ चतुष्पदे।।[13]

अरुन्धती को अथर्ववेद में भी सहदेवी का पर्यायवाची माना गया है ''शर्मयच्छत्वोषधिः सहदेवीररुन्धती।''[14]

अगले मन्त्र में इसे विश्वरूपा, सुभगा और जीवला भी कहा गया है– विश्वरूपां सुभगाच्छावदामि जीवलाम्।[15]

इसी प्रकार से एक मन्त्र में कहा गया है कि औदुम्बर मणि पशुओं के लिए पुष्टिकारक है और उन्हें सन्तति प्रदान कर उनका दूध बढ़ाती है–

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय वेधसा।
पशूनां सर्वेषां स्फातिं गोष्ठे मे सविता करत्।।[16]

उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है औदुम्बर अर्थात् 'गूलर' से निर्मित मणि बाँधने से पशु स्वस्थ होते हैं।

इस प्रकार अथर्ववेदाध्ययन से ज्ञात होता है कि इसमें अनेक ऐसी औषधियों एवं वनस्पतियों का उल्लेख है जिन्हें मनुष्य के लिए उपकारी माना गया है। निश्चित रूप से इनमें से अनेक पशुओं के लिए भी उपकारी सिद्ध होंगी।

अथर्ववेदः शल्य चिकित्सा

अथर्ववेद में औषधियों के अतिरिक्त पशुओं के लिए कतिपय शल्य–चिकित्सा का भी उल्लेख मिलता है। एक मन्त्र में कहा गया है कि गाय के दोनों कानों को गर्म लोहे से छेद किया जाये तो वह गाय अधिक बच्चे देती है–

लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि।
अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु।।[17]

उक्त मन्त्र से पहले वाले मन्त्र में वायु देव को गायों का रक्षिता कहा गया है वहीं यह बताया गया है कि त्वष्टा उनके पोषक है इन्द्र उनके अधिपति हैं और रुद्र पशुओं के पीड़ाकर देव हैं आचार्य सायण ने कहा है रुद्र पीड़ापरक देवता होते हुए उन्हें बहुत सी सन्ततियाँ हो, इसके लिए उनकी चिकित्सा करें–''रुद्रः पशूनां अभिमन्ता पीडाकरो देवः भूम्ने बहुत्वाय चिकित्सतु पादास्ययादिरोगपरिहारेण बनीः करोतु इत्यर्थः।[18]

अथर्ववेद में एक स्थल पर पशुओं को क्लीब करने की विधि का भी वर्णन प्राप्त होता है। एक सूक्त के अनेक मन्त्रों में इसके सम्बन्ध में विवेचन प्राप्त होता है। एक मन्त्र के अनुसार वृषण के ऊपर जो शुक्र–वाहिनी नाड़ियाँ होती हैं उनको शम्मा अर्थात् तेज हथियार से छेदन अथवा भेदन करके क्लीब बनाया जाता है–

ये ते नाड्यौ देवकृते ययोस्तिष्ठति वृष्ण्यम्।
ते ते भिनच्मि शम्ययामुष्या अधि मुष्कयोः।।[19]

इस प्रकार सारांशतः कहा जा सकता है कि अथर्ववेद में जीवन को सुखी बनाने हेतु मानव चिकित्सा का ही उल्लेख प्राप्त नहीं होता, अपितु पशुओं को संरक्षण प्रदान करने हेतु पशु–चिकित्सा का भी उल्लेख पदे–पदे प्राप्त होता है। अथर्ववेद में यत्र–तत्र पशुओं की चिकित्सा उनके संरक्षण और उनके रोगों तथा कारणों आदि का भी विवेचन मिलता है, जिसको बाद के पश्वायुर्वेद–शास्त्र के लिए प्रेरणा स्रोत माना जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अथर्ववेद 3/28/5
2. अथर्ववेद 3/28/5
3. अथर्ववेद 3/28/6
4. अथर्ववेद 3/28/5
5. अथर्ववेद, 3/28/2
6. यजुर्वेद, 12/80
7. अथर्ववेद 3/28/5
8. अथर्ववेद 3/28/1
9. वेदों में आयुर्वेद, पृ0 196
10. अथर्ववेद, 3/28/1
11. अथर्ववेद 3/28/2
12. अथर्ववेद 6/59/1
13. अथर्ववेद 6/59/2
14. अथर्ववेद 6/59/3
15. अथर्ववेद 19/31/1
16. अथर्ववेद 6/141/2
17. अथर्ववेद 6/141/1
18. अथर्ववेद 6/138/4